MICRO TEACHING
मुख्य शिक्षण कौशल

मुख्य शिक्षण कौशलों का विवरण इस प्रकार है –

1. पाठ प्रस्तावना कौशल (Skill of Introducing the Lesson).
2. व्याख्या कौशल (Skill of Explaining).
3. दृष्टांत कौशल (Skill of Illustrating with Examples).
4. उद्दीपक परिवर्तन कौशल (Skill of Stimulus Variation)
5. प्रश्न कौशल (Skill of Questioning)

By.

Dr. Asha Kumari Gupta

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

पाठ प्रस्तावना कौशल
Skill of Introducing the Lesson.

पाठ प्रस्तावना कौशल का सम्बन्ध पाठ को प्रभावशाली ढंग से प्रारम्भ करने की कला से है। कहते हैं "Well begin is half done" अर्थात् यदि किसी कार्य का प्रारम्भ उचित ढंग से हो जाए तो समझना चाहिए कि आधा कार्य पूर्ण हो गया है।

कक्षा शिक्षण में यदि अध्यापक पाठ का प्रारम्भ उचित ढंग से करता है तो वह छात्रों को अभिप्रेरित करने एवं पाठ में उनकी रुचि बनाए रखने में सफल होता है। पाठ प्रस्तावना के लिए छात्रों के पूर्व ज्ञान की आवश्यकता होती है। अध्यापक अपने कल्पना शक्ति, अनुभव एवं सृजनात्मक के आधार पर कुछ क्रियाओं को निर्धारित करता है। पाठ प्रस्तावना कौशल को विन्यास प्रेरणा (Set Induction) कौशल भी कहा जाता है क्योंकि इससे छात्रों से मानसिक सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

- पाठ प्रस्तावना कौशल के घटक (Components of Skill of Introducing the lesson)

1. छात्रों का पूर्व ज्ञान (Previous Knowledge of Students) - 01
पूर्व ज्ञान से अभिप्राय उस ज्ञान से है जो छात्र पाठ आरम्भ होने से पूर्व रखते हैं। यह पूर्व ज्ञान उसी विषय से सम्बन्धित होनी चाहिए जिससे संबंधित शिक्षण क्रियाएँ आयोजित की जानी है। अध्यापक को छात्रों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए विभिन्न युक्तियों एवं प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए। छात्रों के पूर्व ज्ञान को जानने के पश्चात अध्यापक नवीन ज्ञान का पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

Scanned with CamScanner

2. कथनों का विषय-वस्तु एवं उद्देश्य से सम्बन्ध (Relationship between subject-matter, objectives and statements) :- पाठ प्रस्तावना के लिए अध्यापक जिन कथनों का प्रयोग करता है वे कथन विषय-वस्तु एवं नवीन ज्ञान से सम्बन्धित होने चाहिए और उस विषय-वस्तु का सम्बन्ध पूर्व निर्धारित उद्देश्यों से होना चाहिए। यदि अध्यापक ऐसा नहीं करता तो पाठ की प्रस्तावना प्रभावशाली तथा रुचिकर नहीं हो सकती।

3. उचित क्रम (Proper Sequence) :- पाठ की प्रस्तावना के मुख्य बिन्दुओं में तर्क संगत क्रम होना चाहिए। तर्क संगत क्रमबद्ध होने से छात्रों को बोधगम्यता में बाधा उत्पन्न नहीं होती है।

4. प्रस्तावना की अवधि (Duration of Introduction) :- पाठ प्रस्तावना की अवधि न तो अधिक लम्बी होनी चाहिए और न ही अधिक छोटी। प्रस्तावना की अवधि इतनी होनी चाहिए कि छात्रों को अभिप्रेरित किया जा सके। इससे वे नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो जाते हैं और विषय-वस्तु में उनकी रुचि बनी रहती है।

5. उद्देश्यों के अनुरूप साधन (Objectives and Devices) :- पाठ प्रस्तावना को रुचिकर एवं प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक इन साधनों का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे :-

(i) उदाहरण, उपमाओं का प्रयोग (Use of examples, analogies)
(ii) प्रश्न पूछना (Questioning)
(iii) कहानी कथन (Story telling)
(iv) नाटक (Drama).
(v) व्याख्यान, विवरण, दृष्टान्त (Lecture, Descriptions, Narration)
(vi) ~~प्रदर्शन~~ प्रयोग एवं प्रदर्शन (Experimentation and Demonstration)
(vii) दृश्य-श्रव्य साधन (Audio-Visual Aids)

इन साधनों का चयन पाठ के उद्देश्यों एवं छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

Asha Kumari Gupta
Scanned with CamScanner